प्रॉमिनेंस नवाचार

अंक 1 | 1 अप्रैल से 30 अप्रैल 2025

संवाद क्लब नवाचार के रंग में

मयंक कुमार
निदेशक (डायरेक्टर)
प्रॉमिनेंस वर्ल्ड स्कूल

कौतुक– निदान,संश्लेषण–विश्लेषण,
है समाहित इसी में विद्यार्थियों की सारी उक्ति।
रचनात्मकता और सृजनात्मकता जिसमें,
प्रॉमिनेंस संवाद क्लब की यह पत्रिका 'नवाचार'

माननीय निदेशक की कलम से

अपने विद्यार्थियों की रुचि को परिष्कृत करते हुए साहित्य के प्रति इनकी अनुरक्ति का जीता–जागता उदाहरण है–'नवाचार पत्रिका'
किसी भी कार्य को एक सफल आकार देने में अनेक लोगों की भूमिका होती है।
इस पत्रिका को आपके सामने लाकर मुझे सही मायनों में काफी खुशी हो रही है
जिसके लिए इससे जुड़े समस्त जनों
को विशेष प्यार, आशीर्वाद और आभार।
यह परंपरा बनी रहनी चाहिए। इसी शुभकामना के साथ.....

संभावनाओं के नभ में, विश्वास के विहग हैं,
भाषा की उन्नति से उत्थान पथ प्रखर है

माननीया प्रधानाचार्या की कलम से

भाषा विचार–विनिमय का उचित साधन तथा अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। प्रत्येक विवेकशील प्राणी भाषा और संकेतों के सहारे अपनी सोच–समझ,व्याख्या तथा समालोचना को सबके सामने अपने तरीके से व्याख्यायित करता है। उसकी प्रतिभा की कद्र भी तभी दिखाई देती है। संवाद भाषा विचार–विनिमय का उचित साधन तथा अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। संवाद –क्लब के नौनिहालों द्वारा 'नवाचार' पत्रिका में प्रस्तुत रचनाएँ नि :संदेह प्रशंसनीय हैं। इनकी रचनाएँ इन्हें मौलिकता तो प्रदान करती ही हैं,साथ ही विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व का भी विकास करती है। मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ , साथ ही संपादकीय – मंडल प्रभारी को भी धन्यवाद देती हूँ जो सदैव हिंदी भाषा के प्रति विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

सुश्री डॉ.मृणालिनी सिंह
प्रधानाचार्या
प्रॉमिनेंस वर्ल्ड स्कूल

उद्घाटन समारोह

प्रॉमिनेंस वर्ल्ड का नवाचार के साथ सृजन, गाथा

विभागाध्यक्षा की कलम से

अपनी भाषा ,मातृ समान होती है। सभी को अच्छी लगती है। हम सबसे सुंदर एवं सहज अभिव्यक्ति अपनी भाषा में कर पाते हैं। हमारा चिंतन – मनन सब उसी में होता है। भाषाई गतिविधियाँ बच्चों की भाषा के प्रति रुचि को प्रोत्साहित करने के साथ ही उनके मनोभावों एवं विचारों को प्रस्तुत करने हेतु सशक्त भूमिका अदा कर, उनके आत्मविश्वास व व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होता है। यह उत्तरदायित्व विद्यार्थी सदस्यों ने अनेक प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा बखूबी निभाया है। विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य के प्रति रुचि विकसित करना तथा उन्हें उत्साहित करना एक सफल कदम है। यही कदम उन्हें भावी जीवन में एक सफल व जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायक सिद्ध होगा। विद्यार्थियों की प्रतिभा,क्षमता और प्रयास सदैव स्मरणीय एवं अग्रगण्य रहें तथा उन्हे अपने अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति हो। इसी विश्वास और आशा के साथ सभी विद्यार्थियों को शुभकामना देती हूँ। मेरा आशीर्वाद सदैव आपके साथ है।

अपरिमित गुण, कला, प्रतिभा के हो तुम सागर।
अपनी कलम से कर दो, जग को तुम चमत्कृत।
दे रही मंच हिंदी–नवाचार तुम्हें , आगे बढ़ो! नव विचारों को अब न दबने दो।
अपनी सुनहरी कलम से, अलक्षित प्रतिभाओं को अब कर दो, उजागर।"

मिस झा
हिंदी एवं विभागाध्यक्षा

पृथ्वी दिवस

विद्यार्थी संपादक-मंडल की कलम से

"समूह में कार्य करना और सीखना
एक अलग ही प्रतिभा है"

विद्यालय द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं का आयोजन कर
हमने भी बहुत कुछ नया सीखा।
इस मासिक पत्रिका को आपके सामने लाकर हम सभी को प्रसन्नता हो रही है।
आशा करते हैं कि हम बच्चों का प्रयास और हमारा नवाचार आपका स्नेह व आशीर्वाद पाने में अवश्य सफल होगा।

छात्र प्रॉमिनेंस वर्ल्ड स्कूल

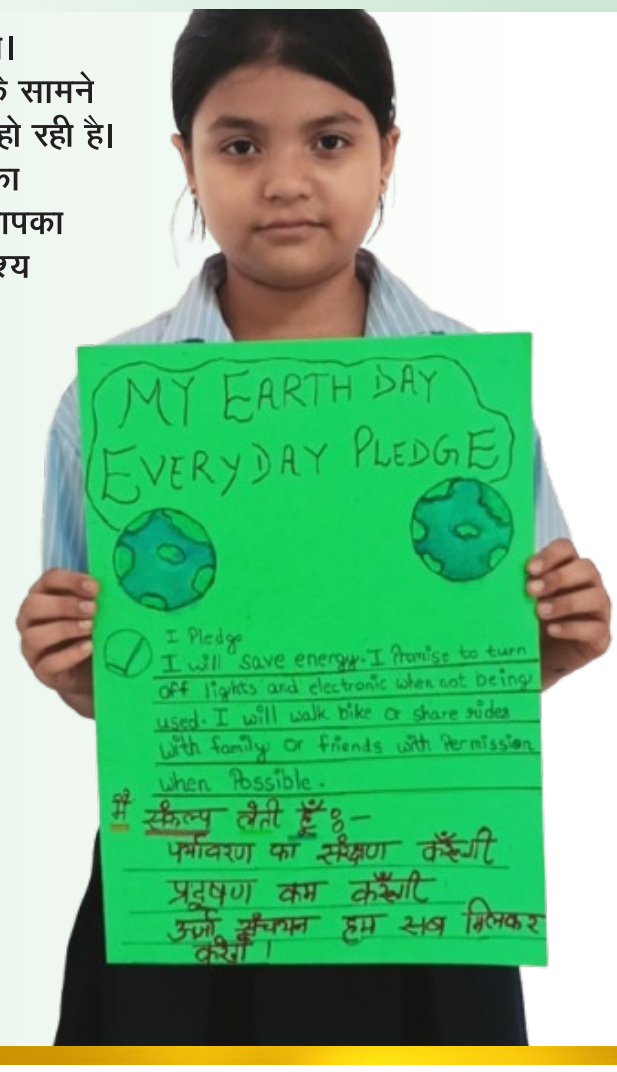

हिंदी भाषा हर भारतीय के लिए हमेशा ही अनमोल रहेगी।
हिंदी हमारे राज्य की शान है और हमारा गौरव है।

हिंदी संवाद-क्लब

हर वो कोशिश करता है और करता रहेगा
जिससे हिंदी हर छात्र के साथ हमेशा
के लिए सुरक्षित रहे
और इस भाषा का महत्व बना रहे।

छात्र प्रॉमिनेंस वर्ल्ड स्कूल

प्रतिभागियों की प्रतियोगिता

निराश न होना कभी

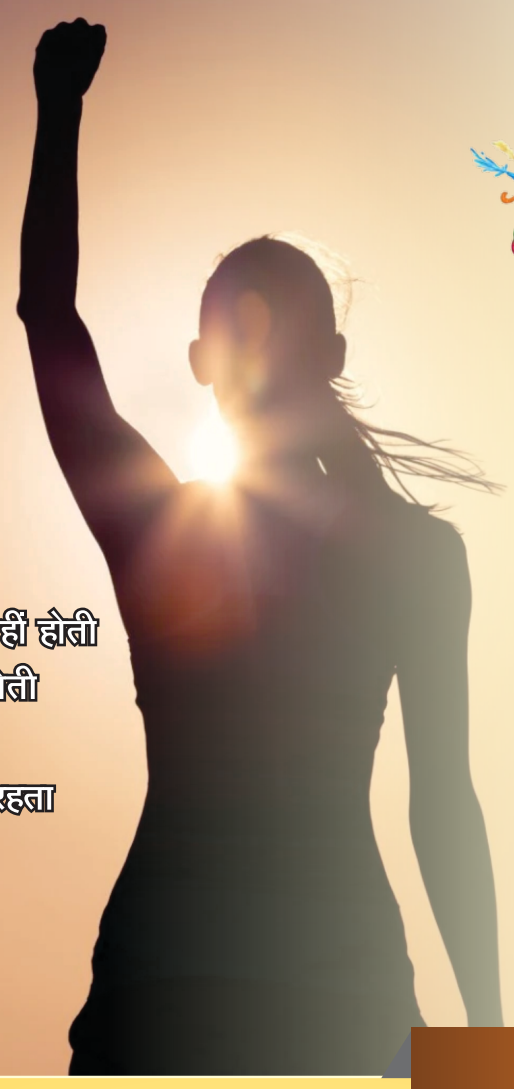

निराश न होना कभी
जीवन की भागदौड़ में,
व्यस्तता के माहौल में,
प्रतियोगिताओं की होड़ में,
हार कर न बैठना कभी
निराश न होना कभी।
जब चारों ओर अँधेरा हो,
जब चिंताओं ने घेरा हो,
सूर्य की बस एक किरण
सुलझा देती हर उलझन।
हार कर कभी बैठना नहीं,
किसी ने कहा है बिलकुल सही,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
तूफ़ानों से डर कर नौका पार नहीं होती
समय सदा एक सा नहीं रहता,
हार–जीत, दोनों का दौर है चलता रहता
हार से निराश होना नहीं,
जीत का विश्वास खोना नहीं,
उठो, प्रयास करो
वक्त अभी बीता नहीं।

मेरे सपनों का भारत

मेरे सपनों का भारत हरा–भरा
मेरे सपनों का भारत हो खुशहाली भरा
साफ सुथरा नीला आसमान हो
और स्वस्थ यहाँ पर हर इंसान हो
पढ़े–लिखे हर बच्चा जहाँ
विद्या के ऐसे मंदिर हों अनेक यहाँ
अलग–अलग बोली हो और –अलग अलग अंदाज
फिर भी सबके मन में भरी हो यहाँ मिठास
मेहनत करेंगे, आगे बढ़ेंगे
भारत का नाम रोशन करेंगे
कुशल भारत, सक्षम भारत
समृद्ध भारत ,खुशहाल भारत
यह सपना हम अवश्य सच करेंगें।

पंडित जी की धोती

बात आज से लगभग दो–तीन साल पुरानी है, मैं अपने ननिहाल गया था। खूब मेहमाननवाज़ी चल रही थी, और मैं भी उसका भरपूर आनंद उठा रहा था, परंतु एक ऐसी बात थी जिसके बारे में सोच कर मेरे हाथ पाँव फूलने लगते थे, और उस शाम तो, अपनी वीरता के क़िस्सों को नमक मिर्च लगाकर मैंने मानो अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार दी। मिनटों के अंदर यह बात पक्की हो गई कि आज छत पर मैं ही सोऊँगा। शाम में मुहल्ले में मुझे चौकीदार मिल गया, मैंने उससे दबी हुई आवाज़ में पूछा, "क्यूँ भई योगी, सुनने में आ रहा है मुहल्ले में कुछ अजीब चीजें हो रही हैं।"उसने पलट के आँखें चुराते हुए कहा,"भैया (भाई) जी इस वक्त उसकी बात मत करिए, लोग कहते हैं जिसने शाम में उसके बारे में बात की, वही रात का पहला शिकार होगा"। मुझे तो मानो साँप सूँघ गया, मैंने आगे कुछ नहीं बोला और चुपचाप घर आ गया। शाम को भोजन किया और किसी तरह छत पर जाने की हिम्मत जुटाई। जैसे–जैसे रात गहराई मेरी हिम्मत सूख कर काँटा हो गई। करवट लेने के लिए मैंने बस चद्दर उठाई ही थी जब मेरे चेहरे पर हवाइयाँ उड़ गईं, जब मैं पुराने पीपल के पेड़ पर उस सफ़ेद सी चीज़ को देखा मुझे दादी की कही बात याद आई,"बेटा रात में पीपल के पेड़ के पास कभी मत जाना, वहाँ रात में भूत रहते हैं। और मैं गेहूँ की बोरियों पर गिर पड़ा। अगर किसी को कानों–कान खबर भी हो जाती कि मैं छत पर से भाग आया, तो आख़िर मेरी क्या इज्ज़त रहती लोग मज़ाक़ उड़ा–उड़ा कर इस घर में मेरा जीना मुश्किल कर देते, बस यही सोच कर मैंने वह रात गेहूं की बोरियों के बीच बिताई। अगले दिन मैंने अपना सामान बँधवाया और वापस घर जाने की तैयारी की, शाम की ट्रेन से मेरी वापसी थी। मैं आँगन में बैठकर अख़बार पढ़ रहा था, साथ ही बार–बार सोच रहा था –"जान है तो जहान है, कुछ भी करके यहाँ से निकलो।" तभी अचानक से रसोईघर में से एक धम्म सी आवाज़ आई, मेरे शरीर में डर की लहर दौड़ गई, ये वही आवाज़ें थीं जिनका ज़िक्र नानी ने किया था, वो आवाज़ें जो उनको आए दिन सुनाई देती थीं। मैंने बुरी हालत में रसोई घर के अंदर झाँका, और वहाँ पाया कि एक बंदर एक के बाद एक बर्तन फेंक रहा था। मेरी जान में जान आई, आख़िर यह भूत वाला रहस्य तो खुला, अभी मैं मुस्कुरा ही रहा था कि मुझेयाद आया, शाम को मैंने जो देखा वो क्या था? क्या सच में यहाँ कोई भूत है? स्टेशन जाते–जाते मैंने हिम्मत जुटा कर पीपल के पेड़ की ओर देखा, और दिन की रोशनी में मुझे समझ आया कि वह कोई भूत या साया नहीं था बल्कि पड़ोस के पंडित जी की धोती थी।

कक्षा 6 का छात्र

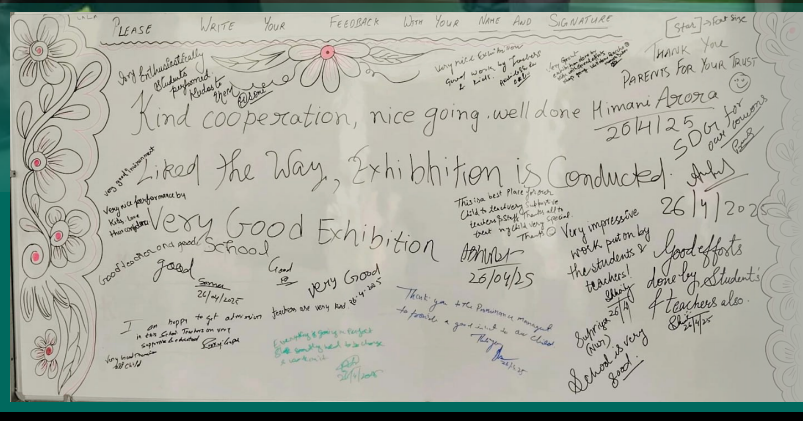

शुभकामनाओं सहित

''मेरी बेटी इस स्कूल में आकर बेहद खुश है। शिक्षकों का प्यार और देखभाल से उसका आत्मविश्वास बढ़ा है।
स्कूल का हर एक पल उसके लिए खास बन गया है। दिल से धन्यवाद!''

श्रीमती उन्नति (अभिभावक–वर्णिका)
श्री गणेश सक्सेना (अभिभावक–कियान सक्सेना)
श्रीमती सरबजीत कौर (अभिभावक–कायरा)

Edited By: Ms. Jha
Matter Compiled By: Ms. Shreya Gupta
All right reserve for Prominence World School
Design At: First Page Graphic, Agra
Design For: Prominence World School
Plot No.62-B, Knowledge Park-05, Greater Noida (West)